

St. Claret College

Autonomous, Bengaluru

UG END SEMESTER EXAMINATION-MAY 2025
B.COM./ B.COM. VOC. (TTM) / BBA II SEMESTER

HNC 224: हिंदी पद्य, फिल्म समीक्षा एवं संक्षेपण

Roll No:
Date:

TIME: 3 hours.

1

MAX. MARKS: 80

This paper contains THREE printed pages and SIX Sections

Instructions:

1. Verify and ensure that the question paper is completely printed.
2. Any discrepancies or questions about the exam paper must be reported to the HOD within 1 hour after the examination.
3. Students must check the course title and course code before answering the questions.

SECTION-I

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक शब्द या वाक्य में लिखिए :

[10x1 = 10]

1. कबीर मनुष्य के जन्म को क्या मानते हैं ?
2. परम गंग को छोड़ कर कुँए कौन खनवता है ?
3. गोपियों को समझाने के लिए मथुरा से कौन आया ?
4. किस स्थान पर रोज पूर्णिमा रहती है ?
5. 'सखि वे मुझसे कह कर जाते' के रचनाकार कौन है ?
6. मजदूर स्त्री के सामने क्या था ?
7. हंस क्या खोज रहे हैं ?
8. कवि ने कैलाश की यात्रा किस ऋतु में की थी ?
9. बासन अधिक घिसने से क्या होता है ?
10. किसके बहने से सावन नहीं मरता ?



SECTION-II

किन्हीं दो की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए:

[2x7= 14]

11. ऐसी वाणी बोलिए, मन का आपा खोय ।
औरन को शीतल करे, आपहु शीतल होय ॥
12. बतरस लालच लाल की, मुरली धरी लुकाय।
सौंह करै, भौहन हँसै, देन कहै नटि जाय ॥
13. जी, पहले कुछ दिन शर्म लगी मुझको;
पर बाद-बाद में अक्ल जगी मुझको,
जी, लोगों ने तो बेच दिए ईमान,
जी, आप न हों सुनकर ज़्यादा हैरान—
मैं सोच समझ कर आखिर
अपने गीत बेचता हूँ

SECTION-III

किसी एक प्रश्न का उत्तर लिखिए :

[1x15 = 15]

14. 'सखी वे मुझसे कहकर जाते' कविता का सार लिखकर उसकी विशेषताएँ बताइये।
15. 'बादल को घिरते देखा है' कविता के आधार पर हिमालय के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन कीजिये।

SECTION-IV

किन्हीं तीन विषयों पर टिप्पणी लिखिए :

[3x7 =21]

16. कबीर की गुरु भक्ति
17. कृष्ण यशोदा संवाद
18. मजदूर स्त्री का संघर्ष
19. कलगी बाजरे की
20. जीवन नहीं मरा करता है

SECTION-V

किन्हीं एक फिल्म की समीक्षा लिखिए :

[1x 10 = 10]

21. 12th फ़ेल

22. मासूम

SECTION-VI

दिए गए अनुच्छेद का उचित शीर्षक देते हुए संक्षेपण कीजिए :

[1x10 = 10]

23. 'सादा जीवन, उच्च विचार' यह मुहावरा सुनने में कितना मनमोहक है, परंतु इसके अनुरूप जीवन को ढालना अत्यंत कठिन है। इस मुहावरे को साकार कर जीवन में उतारने वाले डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन उन महापुरुषों की श्रेणी में आते हैं जिनकी कथनी और करनी में कोई अंतर न था। वे जो कहते थे, उसे करके ही दम लेते थे। डॉ. राधाकृष्णन ने जीवन को कठिन तपस्या के रूप में लिया और स्वयं को इसकी आग में तपाकर कुंदन बना लिया। तदंतर उनकी चमक से संपूर्ण विश्व प्रकाशित हो उठा। उनका जीवन एक शिक्षक के रूप में आरंभ हुआ था, लेकिन अपनी बौद्धिकता और योग्यता के बल पर उन्होंने एक महान दार्शनिक और लेखक के रूप में ख्याति अर्जित की। जब डॉ. राधाकृष्णन राष्ट्रपति पद पर आसीन हुए तो उन्हें दस हजार रूपए मासिक वेतन मिलता था। लेकिन वे मात्र ढाई हजार रूपए मासिक वेतन लेते थे। उनके वेतन की शेष राशि देश की उन्नति और विकास कार्यों में खर्च होती थी। डॉ. राधाकृष्णन देश के प्रति समर्पित व्यक्ति थे।